Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت
Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **17.03.2017** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

अल-जज़ायर में आजकल अत्याचार बढ़ रहा है, पुलिस अहमदियों को परेशान कर रही है अदालतें अपनी इच्छानुसार निर्णय करके अहमदियों को जेलों में डाल रहीं हैं

ये लोग जो अत्याचार कर रहे हैं वे याद रखें कि अल्लाह तआला निर्दोष को देख रहा है तथा निर्दोष की दुआएँ अल्लाह तआला के सिहांसन तक पहुंच रही हैं। उसकी अदालत ने जब निर्णय किया तो इन अत्याचारियों की न दुनया रहेगी, न आख़िरत

इस्लाम विरोधी शक्तियों के ज़ोर को तोड़ने के लिए यदि कोई प्रयास कर सकता है, सुनियोजित प्रयास, तो वह अहमदिया जमाअत ही कर सकती है। दूसरे मुसलमान इस्लाम की सुन्दरता का प्रकट करने तथा इसका पैग़ाम पहुंचाने का काम कर ही नहीं सकते। उनमें वह संगठन ही नहीं है और उनके पास ज्ञान है।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

आजकल हम देख्ते हैं कि पश्चिमी तथा प्रगतिशील दुनया में शासन करने वाली राजनैतिक जमाअतें अथवा नस्ल परस्त या क़ौम परस्त राजनेताओं की और पार्टियों की ख्याति बढ़ती चली जा रही है तथा उनका महत्त्व बढ़ता जा रहा है। आलोचक भी इस विषय पर बहुत कुछ लिखते हैं कि जो वर्तमान सरकारें है जो सत्तापक्ष के शासक कहलाते हैं, उनकी इमिग्रेशन की पालिसीज़ के कारण यह सब कुछ हो रहा है तथा इसके अतिरिक्त भी अनेक कारण हैं। परन्तु इन सारी बातों की तान मुसलमानों पर टूटती है कि मुसलमानों को इन देशों में आने पर रोक होनी चाहिए, इन पर बैन होना चाहिए क्यूंकि ये हमारे साथ घुलते मिलते नहीं तथा अलग रहते हैं तथा अपने धर्म के अनुसार, जो उनके विचारानुसार कट्टरवाद है, उस पर चलते हैं। अथवा फिर यह कहा जाता है कि इनको यदि यहाँ हमारे साथ रहना है तो फिर अपने चलन को छोड़कर हमारी रीति तथा हमारे रहन सहन को अपनाना होगा। यदि ऐसा नहीं करते तो इसका अर्थ यह है कि ये हमारे साथ मिलकर रहना नहीं चाहते और जब अपनी एकाकी तथा धार्मिक स्थिति क़ायम रखते हैं अथवा रखना चाहते हैं तो इसका अर्थ यह है कि हमारे देश के लिए हानिकारक हो सकते हैं। आश्चर्य जनक एवं मूर्खता पूर्ण बातें है कि मस्जिद के मिनारे हमारे लिए ख़तरा हैं। इनकी महिलाओं के हिजाब हमारे लिए ख़तरा हैं। इनकी महिलाओं का पुरुषों से हाथ न मिलाना अथवा पुरुषों का महिलाओं के साथ हाथ न मिलाना हमारे लिए ख़तरा है। यहाँ यू.के. में तो एक आध ही राजनेता शायद इस प्रकार की बातें करते हों परन्तु अन्य देशों में इस विषय पर बड़ा शोर है तथा फिर प्रतिदिन राजनीतिज्ञों के बयान आ रहे हैं इस बारे में। और फिर यह दलील भी देते हैं कि देखो मुसलमानों का हमारे लिए ख़तरा होना इस बात से भी प्रमाणित होता है कि मुस्लिम देशों में कट्टरवाद तथा असंविधानिक गतिविधियाँ अपनी चरम सीमा तक पहुंची हुई हैं तथा यहाँ हमारे देश में भी आतंकी आक्रमण मुसलमानों की ओर से ही अधिक हो रहे हैं। अन्य बातें तो उनकी इस्लाम से शत्रुता के कारण हैं परन्तु

दुर्भाग्यवश यह बात उनकी उचित है कि मुस्लिम देशों में आतंकवाद है। इस बात को छोड़ते हुए कि कट्टर पंथी गुटों तथा मुस्लिम देशों में उपद्रवी गुटों को हथियार पश्चिमी देशों से ही मिलते हैं तथा अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए तथा इसलाम के विरुद्ध जो द्वेष है उसको प्रकट करने के लिए कुछ शक्तियों ने बड़ी चतुराई से ऐसे गुटों को सक्रिय किया है। दुर्भाग्यवश मुसलमानों को जब भी हानि हुई है, मुसलमानों के अपने कर्म, षड्यन्त्रों तथा उपद्रवों और एक दूसरे के अधिकारों के हनन और व्यक्तिगत स्वार्थ को राष्ट्रीय और क़ौमी लाभ पर प्राथमिकता देने के कारण ही हुई है। इस्लाम की शिक्षा को भुलाने तथा उसके उद्देश्य को अनदेखा करने से ही पहुंचा है। बजाए इसके कि अपनी रूहानी हालत को सुन्दर बनाते तथा अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशों का अनुपालन करते, दुनया के लालच, सांसारिक प्रतिष्ठा तथा लक्ष्य शासकों के भी, अन्य राजनेताओं के भी और आलिमों के भी प्राथमिक बन गए हैं और आलिमों ने उम्मत को और अधिक अन्धेरों की गहराईयों में धकेलने में अपनी भूमिका धर्म की आड़ लेकर अदा की है और कर रहे हैं। बजाए इसके कि ज़माने की हालत को देखते हुए तथा अल्लाह तआला के वादों को सामने रखते हुए इन प्रस्थितियों में जो आवश्यकता थी, उनपर विचार करते और यह देखते कि हम इन प्रस्थितियों में उस व्यक्ति की तलाश करें जिसके विषय में अल्लाह तअला ने पहले ही बता दिया था कि ऐसी प्रस्थितियों में वह ईमान को सुरय्या से वापस लाएगा तथा इस्लाम की साख को तथा मुसलमानों के ईमान को पुनः स्थापित करेगा। न केवल इस बात से ये लोग वंचित हो गए अपितु अल्लाह तआला के भेजे हुए के विरोध में इतना बढ़ गए कि जिसकी कोई सीमा नहीं तथा उसके मानने वालों पर भी अत्याचार और विनाश को चरम सीमा तक पहुंचा दिया। आजकल अल-जज़ायर में यह अत्याचार बढ़ रहा है, पुलिस अहमदियों को परेशान कर रही है। अदालतें अपनी इच्छानुसार फ़ैसले करके अहमदियों को जेलों में डाल रही हैं तथा कुछ लोगों को एक से लेकर तीन साल तक का कारावास मिला है। केवल इस कारण से कि उन्होंने यह कहा कि हमने आने वाले इमाम को मान लिया है और इस लिए मान लिया है कि हमें अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यही निर्देश है। ये लोग जो जेल में हैं अथवा जिनको दंड दिया गया है अथवा दंड की प्रतीक्षा में हैं कि जो भी अत्याचार हम पर कर लें, हम अपने ईमान से पीछे हठने वाले नहीं हैं। परन्तु ये लोग जो अत्याचार कर रहे हैं, वे भी याद रखें कि अल्लाह तआला निर्दोष को देख रहा है तथा निर्दोष की दुआएँ अल्लाह तआला के सिहांसन तक पहुंच रही हैं। उसकी अदालत ने जब निर्णय किया तो इन अत्याचारियों की न दुनया रहेगी, न आख़िरत। अतः उनको अल्लाह तआला की तक़दीर से डरना चाहिए। अहमदियों पर अत्याचार करके तथा इस्लाम के विरुद्ध अनुचित काम करके, अपनी सरकार एवं शक्ति के बल पर, जिसे ये अपनी सफलता समझ रहे हैं, उन्हें याद रखना चाहिए कि एक दिन अल्लाह तआला के सम्मुख भी पेश होना है तथा वहाँ इन अत्याचारों का जवाब भी देना होगा। मुसलमानों की स्थिति भी इस समय आश्चर्य जनक बनी हुई है। एक ओर तथाकथित मौलवियों का वर्ग है अथवा कट्टर पंथी गुट हैं जिन्होंने प्रत्येक दिशा में इस्लाम के नाम पर उपद्रव मचाया हुआ है तथा दूसरी ओर वे लोग हैं जो उनकी प्रतिक्रिया में तथा दुनया के प्रभाव के कारण धर्म से कटे हुए हैं। इसी प्रकार कुछ राजनेता शासक हैं, वे यदि मौलवी से सहमत न भी हों तो अपनी कुर्सी के छिन जाने के भय से कि कहीं मौलवी लोग हमारे विरुद्ध न भड़का दें, चुप हैं। मानो कि मुसलमानों का प्रत्येक वर्ग जिसने अल्लाह तआला के भेजे हुए का इन्कार किया वह अल्लाह तआला तथा उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निर्देशों से दूर चला गया। ऐसी अवस्था में अहमदियों को सोचना चाहिए कि जब उन्होंने ज़माने के इमाम को माना है तो उनपर बड़ा दायित्व आता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आकर हमें यह बताया

कि तुमने अल्लाह तआला के ओदशानुसार चलना है तथा उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुसरण करना है, अपने ईमान को भी नष्ट नहीं होने देना तथा फ़साद को भी पैदा होने नहीं देना और साथ ही यह बात भी सामने रखनी है कि अल्लाह तआला के पैग़ाम को दुनया तक पहुंचाना भी है ताकि तौहीद की स्थापना हो। अल्लाह तआला ने जो क़ुर्आन-ए-करीम में हमारा मार्ग दर्शन किया है, उसके अनुसार चलो और वह यह है कि-

اُدْعُ إِلَىٰ سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُم بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَن ضَلَّ عَن سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿النحل: ١٢٦﴾ अर्थात, अपने रब्ब के रास्ते की ओर विवेक और अच्छी नसीहत के साथ बुला तथा उनके साथ ऐसी दलील के साथ वाद-विवाद कर जो उत्तम हो। अतः तबलीग़ के लिए, इस्लाम की सुन्दर शिक्षा फैलाने के लिए इस्लाम के आदेशों का यथार्थ बताने के लिए प्रमाण सहित बात करने की आवश्यकता है, न कि इस प्रकार कि जिस प्रकार आजकल के तथाकथित आलिम अथवा कट्टर पंथी गिरोह कर रहे हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि आयत جَادِلْهُم بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ का यह आश्य नहीं है कि हम इतनी विनम्रता प्रकट करें कि चापलूसी करके सत्य के विरुद्ध बात का सत्यापन करें। इस प्रकार विवेक का यह अर्थ नहीं कि बुज़दिली दिखाई जाए बल्कि हक़ बात को फ़साद के बिना कहना, यह हिकमत है।

फिर एक स्थान पर इस विषय में और अधिक व्याख्या करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि जब तू किसी के साथ बहस करे तो हिकमत और नेक नसीहतों के साथ बहस कर जो विनम्र तथा शालीनता के साथ हो। हाँ यह सच है इस ज़माने के अनेक मूर्ख तथा नादान मौलवी अपनी मूर्खता के कारण यह विचार रखते हैं कि जिहाद और तलवार के द्वारा दीन को फैलाना बड़ा पुण्य का काम है तथा वे चोरी छुपे और पाखंड के साथ जीवन व्यतीत करते हैं। परन्तु वे इस विचार धारा में बड़ी ग़लती पर हैं तथा उनकी कुधारणा का आरोप अल्लाह की किताब पर नहीं आ सकता। यदि वे इस प्रकार की बातें करते हैं तो उनकी मूर्खता है, इसका यह अर्थ नहीं कि अल्लाह तआला की किताब पर आरोप आए। फ़रमाया कि वास्तविक सत्य तथा यथार्थ किसी बल के कारण नहीं होता बल्कि जबरदस्ती तो इस बात का प्रमाण होती है कि आध्यात्मिक नीतियाँ दुर्बल हैं। क्या वह ख़ुदा जिसने अपने पाक रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वह्यी अवतरित की कि فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ أُولُو الْعَزْمِ अर्थात, तू ऐसा संतोष कर जो समस्त महान रसूलों के संतोष के बराबर हो, अर्थात यदि नबियों का संतोष एकत्र किया जाए तो तेरे संतोष से अधिक न हो और फिर फ़रमाया कि لا اكراه فى الدين अर्थात दीन में ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं होनी चाहिए और फिर फ़रमाया कि اُدْعُ إِلَىٰ سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ अर्थात, हिकमत और नेक उपदेशों के साथ बहस कर न कि सख़्ती से और फिर फ़रमाया कि وَالْكَاظِمِينَ الْغَيْظَ وَالْعَافِينَ عَنِ النَّاسِ अर्थात, मोमिन वही हैं जो क्रोध को खा जाते हैं तथा झूठे और अत्याचारी प्रकृति के लोगों के आक्रमण को क्षमा कर देते हैं तथा अपशब्दों का जवाब अपशब्दों से नहीं देते। क्या ऐसा ख़ुदा यह शिक्षा दे सकता है कि तुम अपने दीन के इन्कार करने वालों की हत्या कर दो तथा उनकी सम्पत्ति लूट लो और उनके घरों को सूना कर दो बल्कि इस्लाम की आरम्भिक कार्यवाही जो अल्लाह के आदेशानुसार थी केवल इतनी थी कि जिन्होंने कठोरता के साथ तलवार उठाई वे तलवार से ही मारे गए तथा जैसा किया वैसा बदला पाया। फ़रमाया कि यह कहाँ लिखा है कि तलवार के द्वारा इन्कार करने वालों की हत्या करते फिरो। यह तो मूर्ख मौलवी तथा नादान पादरियों का विचार है जिसमें कोई सत्य नहीं।

अतः इस्लाम की शिक्षा जिसका दूसरे तो अनुपालन नहीं करते अथवा इस लिए कि इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाने में उनको कोई रूचि नहीं है अथवा इस कारण से कि जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया,

नादान और मूर्ख मौलवी हैं। परन्तु हमने मुसलमानों में भी तथा ग़ैर मुस्लिमों में भी यह शिक्षा फैलानी है इस लिए अपने अपने क्षेत्र में, अपनी अपनी सीमाओं में प्रत्येक अहमदी को इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है।

अतः इस स्थिति में हमारे दायित्व और अधिक बढ़ जाते हैं तथा प्रत्येक अहमदी को इस बारे में अपने कर्त्तव्यों का आभास करने की आवश्यकता है। उसका प्रत्येक कार्य इस्लाम का नमूना हो। यदि तबलीग़ नहीं भी कर रहा तो फिर भी उसका कथन एवं कर्म इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाने वाला हो। फिर तबलीग़ के लिए हमें हज़रत अली रज़ीअल्लाहु अन्हु की विवेक पूर्ण इस बात को भी सम्मुख रखना चाहिए। आपने फ़रमाया कि दिलों की कुछ इच्छाएँ तथा झुकाव होते हैं जिनके कारण वह किसी समय बात सुनने के लिए तय्यार रहता है तथा किसी समय इसके लिए तय्यार नहीं होते। कभी इंसान कोई बात सुनने के लिए तय्यार होता है, कभी नहीं होता। इस लिए लोगों के दिलों में उनके झुकाव के अंतर्गत दाख़िल हुआ करो। यह देखा करो कि इस समय क्या अवस्था है और फिर इसके अनुसार बात किया करो तथा उस समय अपनी बात कहा करो जब वह बात सुनने के लिए तय्यार हो। अतः इस विवेक पूर्ण बिन्दु को हमें ग्रहण करना चाहिए।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अब आस्ट्रेलिया में यदि एक वर्ग इस्लाम की दुश्मनी में यहाँ तक पहुंच गया है कि यदि मुसलमान पुरुष महिलाओं से अथवा महिलाएँ पुरुषों से हाथ नहीं मिलाते तो उन्हें देश से निकाल देना चाहिए। इस विषय पर अपनी अपनी परिधि में हिकमत के साथ प्रत्येक अहमदी को काम करना चाहिए अथवा पर्दे के कुछ लोग विरोधी हैं अथवा कुछ देशों में मस्जिदों और मीनारों के विरुद्ध हैं अथवा हॉलैन्ड के एक राजनेता का बयान है कि सारे मुसलमानों को ही देश से निकाल दो, एक विशेष देश के मुसलमानों को देश निकाला दे दो अथवा अमरीका के सदर कुछ मुस्लिम देशों के निवासियों पर प्रतिबन्ध लगाना चाहता है तो निःसन्देह यह इस्लाम विरोधी सोच का परिणाम है। उन देशों में जहाँ इस्लाम के विरुद्ध शक्तियाँ ज़ोर पकड़ रही हैं उनके ज़ोर को तोड़ने के लिए यदि कोई प्रयत्न कर सकता है, सुनियोजित प्रयास, तो वह अहमदिया जमाअत ही कर सकती है। दूसरे मुसलमान इस्लाम की सुन्दरता को प्रकट करने तथा उसके पैग़ाम को पहुंचाने का काम कर ही नहीं सकते। उनमें वह एकता ही नहीं है तथा न ही उनके पास ज्ञान है। यह काम अब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ सम्बंध रखने वालों के द्वारा निश्चित है। अतः इस बात के महत्त्व को हमें समझना चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- इस्लाम की सुरक्षा तथा सत्य को प्रकट करने के लिए सर्वप्रथम तो यह बात है कि तुम सच्चे मुसलमान बन कर दिखाओ तथा दूसरी बात यह है कि इसकी विशेषताओं तथा महत्त्व को दुनया में फैलाओ।

अल्लाह तआला हमें सामर्थ्य प्रदान करे कि हम अपने जीवन को इसके अनुसार व्यतीत करने वाले हों तथा समस्त विरोधों के बावजूद इस्लाम की विशेषताएँ तथा महत्व को दुनया में फैलाने वाले हम बनें तथा वास्तविक इस्लाम की सुरक्षा तथा सत्यता प्रकट करने वालों में से, हममें से प्रत्येक बन जाए।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त में मोहतरम मौलाना मुहम्मद हकीम साहब क़ादियान और मुकर्रम फ़ज़्ल-ए-इलाही नूरी साहब जर्मनी और मुकर्रम इब्राहीम बिन अब्दुल्लाह अबज़ोल साहब मराकश की जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई तथा उनके सद्गुण बयान फ़रमाए।